माँ अञ्जना की प्रार्थना

श्री स्कन्द पुराण की एक कहानी पर आधारित

हज़ारों वर्ष पूर्व भारत में श्री मातङ्ग नामक एक ऋषि रहते थे। अपनी कृपा एवं शक्ति, दक्षता तथा असाधारण बल के कारण वे ऋषियों में सिंह के रूप में जाने जाते थे। वे दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रदेश में किष्किन्धा नामक गाँव के बाहर एक पर्वत पर रहते थे। एक दिन श्री मातङ्ग ऋषि, मन्दिर में भगवान विष्णु की पूजा करने हेतु गाँव में आए। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के पश्चात् वे बाहर एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गए। उन्होंने देखा कि एक स्त्री भेंटस्वरूप गेंदे के फूलों की माला, मिठाइयों की थाली तथा रेशमी वस्त्र लेकर वहाँ आ रही थी। यद्यपि, उसका पहनावा सम्पन्नतापूर्ण था, परन्तु ऋषि को लगा कि वह बहुत उदास दिख रही थी। जब वह मन्दिर से बाहर आई तो उन्होंने देखा कि वह रो रही थी।

श्री मातङ्ग ऋषि ने उस स्त्री को सम्बोधित करते हुए उससे पूछा, "बेटी, क्या हुआ? तुम रो क्यों रही हो? इधर आओ। यहाँ बैठो और मुझे बताओ।"

वह स्त्री उनके पास वृक्ष की छाया में आकर बैठ गई। श्री मातङ्ग ऋषि ने देखा कि यद्यपि वह स्त्री सुन्दर थी, किन्तु वह कोई किशोर बालिका नहीं थी।

उसने उन्हें बताया, "मेरा नाम अञ्जना है। मेरे पिता जी भगवान शिव के भक्त हैं।"

ज्ञानी ऋषि मातङ्ग ने कहा, "बहुत अच्छा।"

अञ्जना बोली, "मेरे पिता जी का कोई पुत्र नहीं था, इसलिए भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने हेतु उन्होंने कठिन तप किए। भगवान उनके समक्ष प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि इस जन्म में मेरे पिता जी के भाग्य में पुत्र नहीं है किन्तु उनके यहाँ एक कन्या का जन्म होगा।"

"आगे कहो," श्री मातङ्ग ऋषि ने कहा।

अञ्जना बोली, “एक ऐसी कन्या जिसका पुत्र अपनी बुद्धिमत्ता, शक्ति और भक्ति के लिए विश्वविख्यात होगा।” भावनाओं के कारण उसकी आवाज़ रुंध गई थी। “वह कन्या मैं ही हूँ। किन्तु वर्ष बीतते जा रहे हैं पर मेरा कोई पुत्र नहीं है और न ही मेरे पिता जी का कोई पोता है।”

“तुम्हारा पति है?”

“जी हाँ, जी हाँ। मेरे पति अद्भुत, धैर्यवान तथा स्नेही हैं। वे वानरों के अधिपति हैं। उनका नाम केसरी है। वे वहाँ पर हैं।”

जब श्री मातङ्ग ऋषि ने उस दिशा में दृष्टि घुमाई जिस ओर अञ्जना ने संकेत किया था तो उन्होंने देखा कि एक उत्कृष्ट, शक्तिशाली, कुलीन वानर धैर्यपूर्वक उन्हें देख रहा है। उनके संकेत करने पर केसरी वहाँ आए और उन्होंने ऋषि को आदरपूर्वक प्रणाम किया। श्री मातङ्ग ऋषि ने उन्हें बैठने का संकेत किया।

अब अञ्जना ने रोते हुए कहा, “मैंने अपनी समझ के अनुसार हर सम्भव प्रयास किया है। मैं प्रार्थना करती हूँ। मैं भेंट अर्पित करती हूँ। मैं कई सप्ताहों तक उपवास रखती हूँ। मैं तपस्या करती हूँ-”

“घोर तपस्या,” केसरी ने पुष्टि की।

अञ्जना ने कहा, “परन्तु कुछ नहीं होता। अभी भी मेरा कोई पुत्र नहीं है।”

श्री मातङ्ग ऋषि ने उसे करुणामयी दृष्टि से देखा। उन्होंने देखा कि पुत्र की लालसा ने अञ्जना को जकड़ रखा है और जब तक ऐसा रहेगा, उसका मन शान्त नहीं हो सकता। उन्होंने अपनी आँखे बन्द कीं और वे उस स्थिति में चले गए जहाँ सर्वस्व ज्ञात हो जाता है। कुछ पलों के बाद जब उन्होंने फिर से अपनी आँखे खोलीं तो अञ्जना से ध्यानपूर्वक सुनने के लिए कहा। अब और अधिक कठोर उपवास या घोर तपस्या करने की आवश्यकता नहीं थी। बल्कि अब अञ्जना को वेङ्कटाचल नामक पर्वत पर जाना था जहाँ स्वामीपुष्करिणी नाम की एक झील थी।

ऋषि ने उससे कहा, “उस पवित्र जल के दर्शन मात्र से ही तुम्हारा मन शान्त हो जाएगा। उस पावन जल में स्नान करो। भगवान विष्णु से प्रार्थना करो।”

अञ्जना बोली, “मैं ऐसा ही करूँगी।”

फिर श्री मातङ्ग ऋषि ने उसे पर्वतों पर स्थित एक और पवित्र स्थान के बारे में बताया जो हरा-भरा ग्रामीण क्षेत्र था तथा जहाँ सुगन्धित एवं औषधीय वृक्ष प्रचुर मात्रा में थे। वे अञ्जना से बोले, "वहाँ तुम्हें एक गहरा सरोवर मिलेगा जिसमें एक झरने से जल गिरता है। तुम्हें कुछ समय वहाँ रहना होगा और वायु तथा श्वास-प्रश्वास के देवता, पवन देव की आराधना करनी होगी। उनसे प्रार्थना करो। उनका ध्यान करो।"

अञ्जना बोली, "बस इतना ही?"

श्री मातङ्ग ऋषि ने मुस्कुराते हुए कहा, "बस इतना ही। अपने श्वास-प्रश्वास का आनन्द लेना सीखो। उसे तुम अपने हर अङ्ग को पोषित करने दो। अपने श्वास-प्रश्वास के अन्दर जीवन्त शक्ति, प्राण, को खोजो। समय आने पर तुम्हें अपने इच्छित पुत्र की प्राप्ति होगी। वह अवश्य आएगा, क्योंकि यह तुम्हारी और उसकी दोनों की ही नियति है। और जब वह आएगा, वह अपराजेय होगा। राक्षस, मनुष्य, उनके शस्त्र, कीट या पशु, कोई भी उसे मारने में समर्थ नहीं होगा।"

***

अञ्जना एवं उनके पति केसरी, ऋषि मातङ्ग की आज्ञा का पालन करने हेतु वहाँ से चल दिए। यह कई मील लम्बी यात्रा थी। कपिल तीर्थ पर उन्हें वह झील मिली जिसके बारे में श्री मातङ्ग ऋषि ने बताया था। अञ्जना ने उसके शीतल जल में पवित्र स्नान किया। उसने उस तीर्थ स्थान पर भगवान विष्णु और उनके वराह अवतार को प्रणाम किया और भेंट अर्पित कीं। फिर वह केसरी के साथ जंगल के संकरे मार्गों पर आगे चल पड़ी। वहाँ आसपास हर प्रकार के फलों के वृक्ष थे जैसे आम, बेल, मौलसरी, अन्जीर तथा बादाम आदि। मार्ग तीव्र ढलान वाले थे और धूप बहुत तेज़ थी। किन्तु अन्त में वे उस स्थान पर पहुँचे गए जहाँ से उन्हें एक झरना दिखाई दिया।

एक क्षण के लिए अञ्जना एवं केसरी, चट्टानों के नीचे प्रवाहित हो रहे जल को देखकर स्तब्ध रह गए। उसकी फुहारों में सूर्य के प्रकाश से इन्द्रधनुष बन रहा था और नीचे सरोवर के गहरे जल में लहरों के भँवर बन रहे थे। विस्मयकारी वातावरण था। अञ्जना स्वयं को इस समय शान्त महसूस कर रही थी। उसने पुनः पवित्र जल में स्नान कर आचमन किया। उसने पुनः भगवान विष्णु की स्तुति की।

फिर वह वायु तथा श्वास-प्रश्वास के देवता, पवन देव का ध्यान करने बैठ गई। उसने केवल एक सप्ताह, एक महीने या एक वर्ष के लिए नहीं बल्कि एक हज़ार वर्ष तक प्रतिदिन ऐसा किया। इस पूरे समय केसरी उसके साथ रहे और वे स्वयं भी प्रायः ध्यान में लीन हो जाते थे।

अञ्जना जब बार-बार अपने शरीर को फेफड़ों में हवा भरते और उसे सहजता से निकलते देखती तो वह वायु के इस प्रवाह को अपनी सत्ता को अनुप्राणित करते तथा अपने आसपास के संसार से जुड़ते देखकर आश्चर्यचकित रह जाती थी। इस प्रकार अपने श्वास-प्रश्वास को देखने से अञ्जना की लालसा अब उसे अशान्त नहीं करती थी। उसका मन अधिकाधिक स्थिर; सुदृढ़; आनन्दित होने लगा था। कभी उसे महसूस होता था मानों वह झरने की झिलमिलाती फुहार हो। कभी उसे लगता जैसे वह सरोवर के ऊपर हवा के उष्ण प्रवाह पर उड़ने वाला कोई पक्षी हो। जैसे-जैसे वह अपने अभ्यास पर एकाग्र होती गई, उसने यह पाया कि उसकी सत्ता में स्थित शान्ति से उसे स्नेह हो गया है।

फिर एक दिन, उसे अपने अन्तर में वायु के एक तीव्र गर्जन जैसी आवाज़ सुनाई दी और वायु के वेग से एक सुन्दर आकृति उसके सम्मुख प्रकट हुई। अञ्जना तुरन्त ही समझ गई कि ये संसार को श्वास-प्रश्वास प्रदान करने वाले देवता, पवन देव थे।

पवन देव ने कहा, “हे अप्रतिम भक्ति की देवी, मैं यहाँ तुम्हारी इच्छित अभिलाषा प्रदान करने आया हूँ। वर माँगो।”

पवन देव की उपस्थिति में, एक क्षण के लिए, अञ्जना को लगा जैसे उसे कुछ भी नहीं चाहिए। फिर उसकी अन्तरतम सत्ता से एक आवाज़ आई। उसकी यह अन्तर आवाज़ सुस्पष्ट एवं संकल्पित थी।

उसने कहा, “एक पुत्र। हे असाधारण तेज के देवता, पवन देव मुझे एक पुत्र प्रदान करने की कृपा करें।”

पवन देव ने कहा, “तथास्तु।”

अब ऐसा लग रहा था, जैसे स्वयं पवन देव ही उसके अन्तर में श्वास ले रहे थे। फिर अञ्जना ने हर्षपूर्ण हास्य के स्वर तथा आवाज़ें सुनीं जो कह रही थीं, “कितना अद्भुत! कितना अद्भुत!” उसने अपने आसपास ब्रह्मदेव तथा इन्द्रदेव को उनकी पत्नियों के साथ देखा। उसने भगवती लक्ष्मी तथा अन्य कई देवी-देवताओं को देखा और उनके साथ महर्षि वशिष्ठ तथा वेदों के रचयिता महान वेदव्यास जी को भी देखा। ऐसा लग रहा था जैसे वे सब तालियाँ बजा रहे हों तथा अञ्जना का उत्साहवर्धन कर रहे हों -

यह देखकर हर्षित हो रहे हों कि उसे आध्यात्मिक अभ्यास का आनन्दपूर्ण रहस्य मिल गया था और वह एक महान नियति को पूरा करने जा रही थी।

ऋषि वेदव्यास ने मेघ-गर्जन जैसी आवाज़ में कहा, "हे अञ्जना, मेरे वचनों को सुनो। तुमने ऋषि मातङ्ग की आज्ञा का पालन किया। अपने अटल अभ्यास द्वारा तुमने अपने मन को दोषमुक्त किया। अब तुम एक ऐसे परमवीर पुत्र की माता बनोगी जो महान पराक्रमशाली होगा। उसका जन्म समस्त मानवता के लिए एक वरदान होगा और उसका नाम तीनों लोकों में प्रसिद्ध होगा।"

ऋषि के कथन समाप्त होने पर हवा का वेग शान्त हो गया। अञ्जना मौन के घेरे में स्तब्ध होकर बैठी रही। फिर उसने अपने कानों में अपने प्रिय पति की आवाज़ सुनी जो धीमे स्वर में उसका नाम ले रहे थे। उसने अपनी आँखे खोलीं और अपने पति का मुस्कुराता हुआ सुपरिचित चेहरा देखा।

अञ्जना ने कहा, "हमारा एक पुत्र होगा।"

केसरी ने हाँ में सिर हिलाया, "मैं जानता हूँ। पवन देव तुम्हारे पास आए थे। मैंने वायु की आवाज़ सुनी थी।"

एक वर्ष के भीतर अञ्जना ने एक हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ बालक को जन्म दिया। वह अपने पिता केसरी के समान एक वानर था, किन्तु वह पवन के समान अपना रूप बदल सकता था और वह श्वास- प्रश्वास जैसा ही शक्तिशाली एवं सौम्य था। उन्होंने उस पुत्र का नाम आञ्जनेय रखा।

एक दिन वह बालक वानर के रूप में ईश्वर, एक अजेय योद्धा और भगवान राम के स्वामीभक्त सेवक, श्री हनुमान के नाम से जाना जाएगा।

***

स्कन्द पुराण भारत के प्राचीन ग्रन्थों में से एक है, जिसमें एक सदाचारपूर्ण जीवन जीने हेतु मार्गदर्शन, कहानियाँ, दार्शनिक सिखावनियाँ तथा भजन हैं। ऐसा माना जाता है कि इस पुराण के प्राचीनतम संस्करण छठी शताब्दी के लगभग संकलित किए गए होंगे, यद्यपि उनमें उन घटनाओं का वर्ण्न है जो उनसे हज़ारों वर्ष पहले घटित हो चुकी थीं।

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।